जैविक मॉडल Continue

जा सकता है। क्योंकि कभी-कभी अच्छी शारीरिक बनावट वाले व्यक्ति भी असामान्यता से पीड़ित होते पाए गए हैं। साथ-ही-साथ दोषी स्त्रीकृत प्रकार वाले व्यक्ति मानसिक विकृति के शिकार नहीं हैं। फलतः शारीरिक बनावट के अभाव अन्य कारणों से भी असामान्य व्यवहार उत्पन्न होते हैं।

(b) जैव-रसायन प्रतिमान (Bio-chemical Model)

जैविक रसायन मॉडल असामान्य व्यवहारों की व्याख्या जैव-रसायनिक अपद्रव के आधार पर करता है। इस मॉडल के अनुसार असामान्यता की व्याख्या कुछ रासायनिक पदार्थों के प्रभाव, खाद्य पदार्थों में पौष्टिक आहार की कमी, विटामिन एवं खनिज पदार्थों की कमी तथा हारमोन्स की गड़बड़ी आदि के प्रभावों के रूप में किया गया है। ऐसीटीलकोलाईन (Acetylcholine) नामक रसायन तंत्रिका तंत्र की क्रियाओं को नियंत्रित करने में मदद करता है। विशेषज्ञों का मानना है कि मस्तिष्कीय सुषुम्ना तरल पदार्थ में इस रसायन की मात्रा का स्तर सामान्य नहीं रहने पर व्यक्ति में आक्षेप (Convulsion) उत्पन्न हैं। केटकोलामाईन प्राक्कल्पना के अनुसार जब केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र में केटकोलामाईन नामक रसायन की मात्रा व्यक्ति में घट जाती है, तो व्यक्ति शांत एवं मंदित दिखलाई पड़ता है। इसके ठीक उलट जब इस रसायन की मात्रा व्यक्ति में बढ़ जाती है, तो व्यवहार में आक्रमकता अधिक पाई जाती है। इसी प्रकार इन्डोलामाईन परिकल्पना के अनुसार जब मस्तिष्क में सेरोटोनिन (Serotonin) रसायन की मात्रा घट जाती है तो व्यक्ति में विषाद के लक्षण विकसित हो जाते हैं तथा इसके विपरीत जब इस रसायन की मात्रा की मस्तिष्क में वृद्धि हो जाती है तो व्यक्ति में सांवेगिक उत्तेजना की अधिकता पाई जाती

Krishna Nand M.A III Sem's (2)

5 जैविक मॉडल Continue

बौजिक एवं सहयोगियों (Brozek et al; 1971) के अनुसार विटामीन एवं खनिजों की कमी होने पर कई प्रकार के असामान्य व्यवहार का विकास व्यक्ति में होने लगता है। सचार आदि (Sachar et al, 1973) ने अपने अध्ययन में पाया कि हारमोन्स उपद्रव के कारण कई तरह के असामान्य व्यवहार व्यक्ति में उत्पन्न हो जाते हैं। यथा - पीयूष ग्रंथी (Pituitary gland) के अधिक क्रियाशील हो जाने पर व्यक्ति काफी लम्बा बन जाता है और इस ग्रन्थि के कम क्रियाशील होने पर या निष्क्रियता की अवस्था में व्यक्ति बौना बन जाता है। इसी प्रकार गलग्रन्थि (Thyroid gland) के अधिक सक्रिय होने पर व्यक्ति बुद्धिमान और कम सक्रियता पर मंद बुद्धि का होता है। जब व्यक्ति में एड्रिनल ग्रंथि (Adrenal gland) के असामान्य रूप से क्रियाशील हो जाने पर व्यक्ति में कई प्रकार के संवेगात्मक उपद्रव विकसित हो जाते हैं।

(4) मस्तिष्क क्षति मॉडल या प्रतिमान (Brain damage model) —

मस्तिष्क क्षति मॉडल मस्तिष्कीय क्षति के आधार पर असामान्य व्यवहारों की व्याख्या करता है। आधुनिक अध्ययनो से पता चलता है कि मस्तिष्क में चोट लग जाने के कारण कभी-कभी कई तरह की व्यक्तित्व विकृतियाँ विकसित हो जाती हैं। विकृतियों की गंभीरता चोट की गंभीरता पर निर्भर करती है। इस संदर्भ में किसकर (Kiskar, 1985) ने अपने अध्ययन में पाया कि मस्तिष्कीय क्षति के कारण व्यक्ति में स्मृति भंग, भ्रम, चिंतन विकृतियाँ विकसित हो जाती हैं।

मनोविज्ञानियों एवं मन: चिकित्सकों का समान मत है कि संक्रामक रोग के

Krishna Nand M.A III Sem (3)
जैविक मॉडल continued

सूक्ष्म जीवाणु का गंभीर कुप्रभाव तंत्रिका तंत्र पर सीधा पड़ता है। फलत: व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के असमान्यता के लक्षण विकसित हो जाते हैं। इस श्रेणी में स्पायरोकेट (spirochete) नामक जीवाणु प्रमुख है, जो शरीर में प्रवेश करके मस्तिष्क या सुषुम्ना (spinal cord) को गंभीर क्षति पहुँचाता है और व्यक्ति में उपदंश या सिफलीस (syphilis) नामक रोग उत्पन्न करता है। फलत: व्यक्ति में दैहिक लक्षण के साथ-साथ मानसिक लक्षण में असामान्यता उत्पन्न हो जाती है। दैहिक लक्षण में तुतलाना, लिखावट का अस्पष्ट होना तथा हाथ-पैर की गति में असामान्यता आ जाती है। मानसिक लक्षणों में स्मृति एवं निर्णय का ह्रास होना प्रमुख है।

मद्यपानता के कारण भी असामान्य व्यवहार व्यक्ति में विकसित होते पाए गए हैं। आधुनिक नैदानिक मनोविज्ञानियों और मन: चिकित्सकों के अनुसार आजकल शराब एक प्रमुख नशा है जिसका मानसिक कुप्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। शराब का असर शरीर के उत्तकों के साथ-साथ केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के उत्तकों पर भी होते पाया गया है।

(6) तनाव मॉडल या प्रतिमान (stress model) -
इस मॉडल में असामान्यता की व्याख्या शारीरिक अवस्था के रूप में किया गया है। तनाव जैसी शारीरिक अवस्था की उत्पत्ति के कई कारण होते हैं। ये भौतिक या मनोसामाजिक हो सकते हैं। अत्यधिक तीव्र आवाज, तीव्र रोशनी, कम या अधिक तापमान आदि भौतिक कारण हो सकते हैं। इससे भी व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के असामान्य व्यवहार उत्पन्न होते पाए गए हैं। मनोसामाजिक तनावों में जीवन क्षेत्र में असफलता, अनिर्णयता

Krishna Nand M.A III Sem (4)
2 जैविक मॉडल Continue

मानसिक संघर्ष, निराशा या कुण्ठा, असुरक्षा की भावना आदि मनोसामाजिक तनाव के कारक हैं, जो व्यक्ति में असामान्य व्यवहारों को उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

उपरोक्त अध्ययनों में असामान्य व्यवहार के लिए जैविक कारकों को जवाबदेह माना गया है। परन्तु सभी मनोविज्ञानियों एवं मनः चिकित्सकों द्वारा इसे एक मात्र कारण के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है। इस मॉडल के आलोचकों का मत है कि व्यक्ति में असामान्य व्यवहार के विकास में मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की भी भूमिका अहम रूप में पाई जाती है। इस वर्ग के मनोविज्ञानियों का स्पष्ट मत है कि जैविक कारकों के अतिरिक्त भी असामान्यता के अन्य कारण भी हैं।

The End